29

मत्वर्थीय प्रकरण

तद्धित प्रत्ययों में मतुप् कोई तद्धित प्रत्यय है। तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् (५.२.९४) इस सूत्र से आरंभ करके मत्बर्थीय प्रकरण आरंभ होता है। वह इसका है, और वह इसमें है, इस अर्थ में मतुप् प्रत्यय होता है। जैसे बुद्धि इसकी है अथवा इसमें है इस अर्थ में मतुप् प्रत्यय होता है। बुद्धिमान्, धनवान्, ज्ञानवान् इत्यादि रूप होते हैं। मतुपर्थीयप्रकरण में न केवल मतुप्-प्रत्यय का अन्तर्भाव है अपितु तदस्यास्त्यस्मिन्निति अर्थ में विद्यमान प्रत्ययों का भी मतुपर्थप्रकरण में अन्तर्भाव होता है। यथा- तदस्यास्त्यस्मिन् इस अर्थ में विन्, लच्, इन्, अण् इत्यादि भी अनेक प्रत्यय होते हैं। यथा- माया अस्य अस्ति इस अर्थ में इन्प्रत्यय, तपः अस्य अस्ति इस अर्थ में विन् इत्यादि प्रत्यय होते हैं। इन प्रत्ययों का मतुपर्थीयप्रकरण में अन्तर्भाव विद्यमान है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे :

- मतुपर्थीयप्रत्यय को जान पाने में;
- मतुप्-प्रत्यय किस अर्थ में होते हैं यह जान पाने में;
- मतुप्-प्रत्यय विधायक सूत्रों के उदाहरण जान पाने में;
- मतुप्-प्रत्यय से निर्मित शब्दों के अर्थ को जान पाने में;
- मतुप्-प्रत्यय से शब्द निर्माण कर पाने में;
- वृत्ति के द्वारा महावाक्य को कैसे लघु रूप में प्रयुक्त किया जाता है उस विषय में भली-भाँति जान पाने में;
- सूत्र से कैसे अर्थ निर्णय होता है, यह जान पाने में;
- अनुवृत्ति और अधिकार इनको जान पाने में।

29.1 तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप्॥ (५.२.९४)

सूत्रार्थ – प्रथमान्त प्रातिपदिक से तदस्यास्त्यस्मिन् इस अर्थ में तद्धित संज्ञक मतुप् प्रत्यय पर में होता है।

सूत्रव्याख्या – यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में षट् पद है। तद् यह प्रथमान्तम् है। यहां पंचमी अर्थ में प्रथमा होती है। अस्य यह षष्ठ्यन्त है। अस्ति यह क्रियापद है। अस्मिन् यह सप्तम्यन्त पद है। इति अव्ययपद है। मतुप् यह प्रथमान्त है।

तद्धिताः, प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, समर्थानां प्रथम द्वितीय इति एते यह अधिकार सूत्र आते हैं। अतः सूत्रार्थ होता है – प्रथमान्त प्रातिपदिक से तदस्यास्त्यस्मिन् इस अर्थ में तद्धितसंज्ञक मतुप् प्रत्यय पर होता है।

जैसे – गावः अस्य अस्मिन् वा सन्ति इस अर्थ में प्रयुक्त सूत्र से मतुप् प्रत्यय होता है। मतुप् के के पकार की हलन्त्यम् इससे तथा उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इस सूत्र से इत् संज्ञा करने पर करने पर मत यही मात्र शेष रहता है। अर्थात् वह इसका है अथवा वह इसमें है इस अर्थ में मतुप्-प्रत्ययः होता है। प्रकृतसूत्र में इति शब्द के सन्निधान से वह इसका है अथवा वह इसमें है इस प्रसिद्ध अर्थ के साथ अन्य अर्थ में भी मतुप् का प्रयोग होता है। महाभाष्यकार ने एक श्लोक के द्वारा कहा है –

"भूमनिन्दाप्रशंसासु नित्ययोगेऽतिशायने।
संसर्गेऽस्तिविवक्षायां भवन्ति मतुबादयः॥ " इति

अर्थात् बहुत्व की विवक्षा में, निंदा में, प्रशंसा में, नित्य संबंध में, अतिशय में, संसर्ग में मतुप् आदि प्रत्यय होते हैं। जैसे- बह्व्यो गावः सन्ति अस्य इति गोमान् तो बहुत्व की विवक्षा का उदाहरण है।

पुनः प्रकृतसूत्र में अस्ति यह एकवचन का प्रयोग है फिर भी एक वचन विवक्षित नहीं है उससे एकत्व में द्वित्व में और बहुत्व में मतुपादि प्रत्यय होते हैं। इसलिए ही गावः सन्ति अस्य यहाँ बहुत्व होने पर भी मतुप् होता है। इस प्रकार ही अस्य यहाँ भी एकवचन विवक्षित नहीं है। इसलिए ही धनानि सन्ति एषाम् यहाँ बहुत्व होने पर भी मतुप्-प्रत्यय होता है।

परन्तु अस्ति इससे तो वर्तमान काल विवक्षित होता है। उससे भूतकाल अर्थ में और भविष्यत् अर्थ में मतुप्-प्रत्यय नहीं होता है। इसलिए धनम् आसीत् अस्य उत धनं भविष्यति अस्य इस अर्थ में मतुप् प्रत्यय नहीं होता है। अर्थात् अस्ति यहाँ संख्या का अभाव होने पर भी काल की विवक्षा तो है।

उदाहरण – गावः सन्ति अस्य यह अलौकिक विग्रह होने पर वर्तमान काल और वह इसका है यह अर्थ है। अतः गो जस् इस स्थिति में प्रकृत सूत्र से प्रथमान्त गो इस प्रातिपदिक से मतुप् होता है। मतुप् के उकार और पकार का लोप होने पर गो जस् मत् यह स्थिति होती है। यह समुदाय तद्धितान्त है। अतः कृत्तद्धितसमासाश्च इस सूत्र से प्रातिपदिकसंज्ञा संज्ञा होती है। तत्पश्चात् सुपो

टिप्पणियाँ

धातुप्रातिपदिकयोः इस सूत्र से सुप् का लोप होता है। तब गो मत् इस स्थिति में एकदेशविकृतमनन्यवत् इस न्याय से प्रतिपादिक संज्ञा होती है। तत्पश्चात् स्वौजस् सूत्र से विभक्ति कार्य करने पर सुप् में अनुबंध लोप करने पर गोमत् स् यह स्थिति होती है। तत्पश्चात अत्वसन्तस्य चाधातोः इससे उपधा में स्थित अकार का दीर्घ होने पर गोमात् स् यह स्थिति होती है। तब उगिदचां सर्वस्थानेऽधातोः इस सूत्र से नुम् करने पर और अनुबन्धलोप होने पर गोमान् त् स् यह स्थिति होती है। तत्पश्चात् हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् इस सूत्र से अपृक्त सकार का लोप होता है। तब गोमान् त् इस स्थिति में संयोगान्तस्य लोपः इस सूत्र से संयोगान्तस् तकार का लोप होकर वर्णमेलन होने पर गोमान् यह रूप हुआ।

29.2 रसादिभ्यश्च॥ (५.२.९५)

सूत्रार्थ – वह इसका है इस अर्थ में अथवा वह इसमें है इस अर्थ में रसादिगण में पठित प्रातिपदिक से मतुप् प्रत्यय होता है।

सूत्रव्याख्या – यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। रस आदिः येषां ते रसादयः। तेभ्यः रसादिभ्यः यह तद्गुणसंविज्ञान बहुव्रीहि समास है। रसादिभ्यः यह पञ्चम्यन्तं पद है। चेति यह अव्ययपद पद है।

तद्धिताः, प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, समर्थानां प्रथम द्वितीय ये अधिकार सूत्र आते हैं। तदस्यास्त्यस्मिन्निति यह संपूर्ण सूत्र यह अनुवर्तित होता है। अतः सूत्रार्थः होता है – वह इसका है इस अर्थ में अथवा वह इसमें है इस अर्थ में रसादिगण में पठित प्रातिपदिकों से मतुप्-प्रत्यय होता है। रस, रूप, वर्ण, गन्ध, स्पर्श, शब्द, स्नेह और भाव ये शब्द रसादिगण में पठित हैं। वह इसका है इस अर्थ में अथवा वह इसमें है इस अर्थ में इन शब्दों से पर मतुप् प्रत्यय होता है।

शङ्का – तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् सूत्र से वह इसका है इस अर्थ में अथवा वह इसमें है इस अर्थ में रसादिगण में पठित प्रातिपदिकों से मतुप् प्रत्यय का विधान सम्भव होता है। अतः शङ्का उत्पन्न होती है कि रसादिभ्यश्च इस सूत्र से पुनः मतुप्-प्रत्यय विधान किसलिए किया गया है।

समाधान – यहाँ समाधान दिया गया है – रसादिगण में पठित प्रातिपदिक अदन्त हैं। अतः अदन्त प्रातिपदिक का अत इनिठनौ इस सूत्र से वह इसका है अथवा वह इसमें है इस अर्थ में इन्प्रत्यय और ठन् प्रत्यय प्राप्त होता है। ठन्प्रत्यय और इन्प्रत्यय को बांधकर पुनः मतुप्-प्रत्यय का विधान करने के लिए रसादिभ्यश्च यह सूत्र आवश्यक है।

उदाहरण – रसः अस्य अस्मिन् वा अस्ति यह अलौकिक विग्रह है। रस शब्द रसादिगण में पढ़ा गया है। अतः रसादिभ्यश्च सूत्र से वह इसका है अथवा वह इसमें है इस अर्थ में मतुप् होता है। तब अनुबन्ध लोप करने पर रस स् मत् यह स्थिति होती है। यह समुदाय तद्धितान्त है। अतः कृत्तद्धितसमासाश्च सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होती है। तत्पश्चात् सुपो धातुप्रातिपदिकयोः इस सूत्र से सुप् का लोप होता है। तब रस मत् यह स्थिति हुई। तब मादुपधायाश्च मतोर्वोऽयवादिभ्यः इससे मकार के स्थान पर वकार आदेश होता है। तत्पश्चात् एकदेशविकृतमनन्यवत् इस न्याय से विभक्ति

कार्य करने पर सु प्रत्यय हुआ। उसके बाद रस वत् स् इस स्थिति में उपधा दीर्घ और नुमागम होने पर रस वान् स् यह स्थिति है। तब हल्ङ्याब्भ्यः इत्यादि सूत्र से सुलोप होने पर संयोगान्त तकार का लोप होने और वर्णमेलन होने से रसवान् यह रूप है।

प्रकृति के मकार के स्थान पर वकार आदेश का विधान होता है। उसके लिए सूत्र –

29.3 मादुपधायाश्च मतोर्वोऽयवादिभ्यः॥ (८.२.९)

सूत्रार्थ – मवर्णान्त और अवर्णान्त तथा मवर्णोपध और अवर्णोपध से पर मत् के म को व आदेश हो,परन्तु यवादि से वर्जित हो।

सूत्रव्याख्या – यह विधि सूत्र है। म् च अश्च अनयोः समाहारः इति मम्, तस्मात् मात् यह समाहार द्वन्द्व है। मात् यह पञ्चम्यन्त पद है। यवः आदिर्येषां ते यवादयः, न यवादयः अयवादयः, तेभ्यः अयवादिभ्यः यह पञ्चम्यन्त पद है। उपधायाः यह पञ्चम्यन्त पद है। च यह अव्यय पद है। मतोः यह षष्ठ्यन्त पद है।

पदस्य इसका अधिकार है। उपधायाः इसका विशेषण मत् होने पर येन विधिस्तदन्तस्य सूत्र से स तदन्तविधि से मकारान्त और अवर्णान्त प्राप्त होता है। मात् इसका दो बार ग्रहण होता है। माद् यह उपधा का विशेषण होता है। उससे मकारोपधा और अवर्णोपधा प्रातिपदिक से यह भी प्राप्त होता है। सूत्रे में चकार ग्रहण के सामर्थ्य से दो अर्थ आते हैं। मात् से परे मत् के मकार को वकार हो यह एक अर्थ है।और मात् उपधा से परे के मकार को वकार हो यह दूसरा अर्थ है। दोनों अर्थ मिलकर कोई एक अर्थप्रतिपादित करते हैं वह तो – मवर्णान्त और अवर्णान्त तथा मवर्णोपधा और अवर्णोपधा से पर मत् के मकार को वकार हो, परन्तु यवादिवर्जित हो अर्थात् मकार को वकारादेश होता है। वहाँ निर्मित्त होते हैं–

१. मकारान्त प्रातिपदिक, अवर्णान्त प्रातिपदिक, मवर्णोपधा प्रातिपदिक अथवा अवर्णोपधा प्रातिपदिक इनमें से कोई भी हो।

२. वह प्रातिपदिक यवादिगण पठित में पठित न हो।

मकारान्त प्रातिपदिक, अवर्णान्त प्रातिपदिक, मवर्णोपध प्रातिपदिक अथवा, अवर्णोपधा प्रातिपदिक और वह यवादिगण में पठित प्रातिपदिक से भिन्न, इनके परे मत् के मकार के स्थान पर वकार होता है यह फलितार्थ होता है।

उदाहरण

१. यवादिगणपठितप्रातिपदिक भिन्न मकारान्त प्रातिपदिक का उदाहरण होता है किंवान्। किम् +वान् यवादिगण में किम्– शब्द का पाठ नहीं है। और पुनः मकारान्त प्रातिपदिक है। अतः मत् के मकार का वकार होने और प्रक्रिया कार्य होने पर किंवान् यह रूप है।

२. यवादिगण पठित प्रातिपदिक भिन्न अवर्णान्त प्रातिपदिक का उदाहरण रसवान् होता है। रस यह अदन्त प्रतिपादक है। और रस यह प्रातिपदिक यवादिगण में पठित नहीं है। अतः रस

टिप्पणियाँ

इस अदन्त प्रातिपदिक से पर मकार को वकार आदेश होने और प्रक्रिया कार्य होने पर रसवान् यह रूप बना।

३. यवादिगण पठित प्रातिपदिक भिन्न मवर्णोपधा प्रातिपदिक का उदाहरण होता है लक्ष्मीवान्। लक्ष्मी+ मत् यहाँ मकारोपधा प्रातिपदिक लक्ष्मी है। और वह प्रातिपदिक यवादिगण में भी पठित नहीं है। अतः लक्ष्मी इस मवर्णोपधा से परे मत् के मकार को वकार आदेश होने और प्रक्रियाकार्य होने पर लक्ष्मीवान् यह रूप है।

४. यवादिगण पठित प्रातिपदिक भिन्न अवर्णोपधा प्रातिपदिक का उदाहरण होता है यशस्वान्। यशस् + मत् इस स्थिति में यशस् यह प्रातिपदिक अवर्णोपधा है। और वह यवादिगण में भी पठित नहीं है। अतः यशस् इस अवर्णोपधा प्रातिपदिक पर के मत् के मकार का वकार होने परौ और प्रक्रियाकार्य होने पर यशस्वान् यह रूप है।

29.4 तसौ मत्वर्थे।। (१.४.१९)

सूत्रार्थ – तान्त और सान्त भंसज्ञक होते हैं, मत्वर्थ प्रत्यय परे रहते।

सूत्रव्याख्या – यह संज्ञासूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। मतोः अर्थः मत्वर्थः, तस्मिन् मत्वर्थे यह सप्तमी तत्पुरुष है। मत्वर्थे यह सप्तम्यन्त पद है। तश्च स च तसौ यह इतरेतरद्वन्द्व है। तसौ यह प्रथमान्त पद है।

यचि भम् यहां से भम् यह अनुवर्तित होता है। मतुप् प्रत्यय है। अतः मतुप् प्रत्यय से प्रातिपदिक का आक्षेप होता है। प्रातिपदिक का विशेषण तसौ है। अतः विशेषण होने से येन विधिस्तदन्तस्य इस सूत्र से तदन्त विधि से तान्त और सान्त प्राप्त होते हैं। अतः सूत्रार्थः होता है – तान्त और सान्त भसज्ञक हो मत्वर्थ प्रत्यय परे रहते।

यह सूत्र स्वादिष्वसर्वनामस्थाने सूत्र का अपवाद है। प्रकृतस्थल में स्वादिष्वसर्वनामस्थाने इस सूत्र से पदसंज्ञा होती है। तसौ मत्वर्थे इस सूत्र से भसंज्ञा होती है। परन्तु आकडारादेका संज्ञा इस अधिकार सूत्र के सामर्थ्य से एक संख्या का ही ग्रहण होता है। तब जो संज्ञा पर एवं अवकाश रहित होती है, उसका ग्रहण होता है। इस कारण भसंज्ञा पदसंज्ञा का बाध करती है।

उदाहरण – गुरुतौ स्तः अस्य इति यह विग्रह पर होने पर तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् इस शास्त्र से मतुप् होता है। उसके बाद अनुबन्धलोप होने पर प्रातिपदिकसंज्ञा होती है। तब गुरुत् औ मत् इस स्थिति में स्वादिष्वसर्वनामस्थाने इस सूत्र से गुरुत् इसकी पदसंज्ञा प्राप्त हुई। गुरुत् यह तान्त प्रातिपदिक है। अतः प्रकृत सूत्र से तान्त प्रातिपदिक की भसंज्ञा प्राप्त हुई। अतः प्रकृत सूत्र से पदसंज्ञा को बांधकर भसंज्ञा का विधान होता है, पर होने से तथा अनवकाश होने पर। अतः पदसंज्ञा के अभाव होने से तकार का झलां जशोऽन्ते इस शास्त्र से दकार नहीं होता है। तत्पश्चात् विभक्तिकार्य में सु के उपधादीर्घ होने, सुलोप और संयोगान्त का लोप होने पर प्रक्रिया कार्य में गुरुत्मान् यह रूप है।

29.5 गुणवचनेभ्यो मतुपो लुगिष्टः॥ (वा)

अर्थ- गुणवाचक प्रातिपदिक से पर मतुप, (मत्) का लोप हो।

व्याख्या- यह वार्तिक है। तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् इस सूत्र के भाष्य में यह प्रकृत वार्तिकम् है। प्रकृतवार्तिक से मतुप्-प्रत्यय के लोप का विधान होता है। अतः यह विधिशास्त्र है। यहाँ चत्वार पद हैं। गुणवचनेभ्यः यह पञ्चम्यन्त पद है। मतुपः यह षष्ठ्यन्त पद है। लुग् और इष्टिः ये दोनों पद प्रथमान्त है। गुणम् उक्तवन्तः इति गुणवचनाः। अर्थात् आदि में गुण को कहकर पश्चात् गुणयुक्त द्रव्य को अभिन्नरूप से कहता है,वह गुणवचन होता है। यथा शुक्लः इत्यादि प्रथम रूप से गुण को कहकर बाद में अभिन्न रूप से गुणयुक्त द्रव्य को कहता है। अतः शुक्लशब्द गुणवचन है। अतः सूत्रार्थ होता है- गुणवचन प्रातिपदिक से परे मतुप् (मत्) का लोप हो।

उदाहरण- शुक्लः (गुणः) अस्य अस्ति इस विग्रह में तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् इस शास्त्र से मतुप् प्रत्यय होता है। तत्पश्चात् अनुबन्धलोप होने पर शुक्ल + मत् यह स्थिति होती है। प्रकृत में शुक्ल शब्द समानरूप से गुण और गुणी कहता है। अतः शुक्ल शब्द गुणवचन है। उससे शुक्ल यह गुणवचन प्रातिपदिक से परे के मत् का प्रकृतवार्तिक से लोप होता है। तब विभक्तिकार्य में शुक्लः यह रूप है।

पाठगत प्रश्न 29.1

यहाँ कुछ पाठगत प्रश्न दिए गए हैं-

1. मतुप् प्रत्यय किस सूत्र से विधान किया जाता है?
2. गोमान् यहाँ किस सूत्र से कौन सा प्रत्यय है?
3. अस्ति यहाँ कालविवक्षा है अथवा नहीं?
4. रसादिभ्यश्च इसका क्या अर्थ है?
5. मादुपधायाश्च मतोर्वोऽयवादिभ्यः इस सूत्र से क्या विधान किया जाता है?
6. तसौ मत्वर्थे इस सूत्र से कौन सी संज्ञा विधान की जाती है?

29.6 प्राणिस्थादातो लजन्यतरस्याम्॥ (५.२.९६)

सूत्रार्थ - प्राणिस्थवाचक प्रथमान्त आदन्त प्रातिपदिक से तदस्यास्त्यस्मिन् इस अर्थ में विकल्प से तद्धितसंज्ञक लच् प्रत्यय पर में होता है।

सूत्रव्याख्या - यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में चार पद हैं। प्राणिषु तिष्ठति इति प्राणिस्थम्, तस्मात् प्राणिस्थात् यह पञ्चमी एकवचनान्त पद है। आतः यह भी पञ्चमी एकवचनान्त पद है। लच् यह प्रथमा एकवचनान्त है। अन्यतरस्याम् यह अव्ययपद है।

टिप्पणियाँ

तद्धिताः, प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, समर्थानां प्रथम द्वितीय ये अधिकार सूत्र आते हैं। तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् यहाँ से तदस्यास्त्यस्मिन्निति यह अनुवर्तित होता है। प्राणिस्थात् इस से प्राणिस्थवाचकात् यह बोध्य है। आतः यह प्रातिपदिक का विशेषण होने से आदन्तात् यह अर्थ प्राप्त होता है। अतः सूत्रार्थ होता है – प्राणिस्थवाचक प्रथमान्त आदन्त प्रातिपदिक से तदस्यास्त्यस्मिन् इस अर्थ में विकल्प से तद्धितसंज्ञक लच् प्रत्यय पर में होता है। अर्थात् इस ससूत्र की प्रवृत्ति में निमित्त हैं –

१. प्राणिस्थवाचक प्रातिपदिक आवश्यक है।

२. और वह प्रातिपदिक अदन्त हो।

३. और वह अदन्त प्रातिपदिक प्रथमा विभक्त्यन्त हो।

उदाहरण– चूडालः और चूडावान् प्रकृतसूत्र के उदाहरण है। चूडा यह प्रातिपदिक प्राणिस्थवाचक है। क्योंकि प्राणियों में स्थित केश समूह का वाचक चूडापद है। और वह अदन्त प्रातिपदिक है। और प्रथमान्त पद भी है। अतः चूडा अस्य अस्ति इस विग्रह में प्रकृतशास्त्र से विकल्प से लच्प्रत्यय का विधान होता है। तत्पश्चात् अनुबन्धलोप होने पर तद्धितान्त की प्रातिपदिकसंज्ञा होती है। तत्पश्चात् सुब्लोप होने पर चूडा+ल यह स्थिति होती है। उसके बाद एकदेशविकृतमनन्यवत् इस न्याय से प्रातिपदिकसंज्ञा होने और विभक्ति कार्य होकर चूडालः यह रूप है। लच् के अभाव पक्ष में तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् इस शास्त्र से मतुप्-प्रत्यय होता है। तत्पश्चात् अनुबन्धलोप होने पर मकारक को वकारादेश होकर प्रक्रिया कार्य और वर्णमेलन से चूडावान् यह रूप है।

29.7 लोमादिपामादिपिच्छादिभ्यः शनेलचः॥ (५.२.१००)

सूत्रार्थ – तदस्यास्त्यस्मिन् इस अर्थ में लोमादि पामादि पिच्छादि गण में पठित प्रथमान्त प्रातिपदिकों से विकल्प से तद्धितसंज्ञक श, न तथा इलच् प्रत्यय हो।

सूत्रव्याख्या – यह विधिसूत्र है। इस शास्त्र में दो पद हैं। लोमन् शब्दः आदिर्येषां ते लोमादयः, पामन् शब्दः आदिर्येषां ते पामादयः, पिच्छशब्दः आदिर्येषां ते पिच्छादयः। दोनों स्थान पर तो तद्गुणसंविज्ञानबहुव्रीहि है। लोमादयश्च पामादयश्च पिच्छादयश्च लोमादिपामादिपिच्छादयः, तेभ्यः लोमादिपामादिपिच्छादिभ्यः यह इतरेतरद्वन्द्व है। लोमादिपामादिपिच्छादिभ्यः यह पञ्चम्यन्त पद है। श च न च इलच्च इति शनेलचः यह इतरेतरद्वन्द्व है। शनेलचः यह प्रथमान्त पद है।

तद्धिताः, प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, समर्थानां प्रथमाद्वा ये अधिकार सूत्र आते हैं। तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् इस सूत्र से तद्, अस्य, अस्ति, अस्मिन्, यह पद अनुवर्तित होता है। प्राणिस्थादातो लजन्यतरस्याम् यहाँ से अन्यतरस्याम् यह पद अनुवर्तित होता है। अतः सूत्रार्थ होता है – तदस्यास्त्यस्मिन् इस अर्थ में लोमादिपामादिपिच्छादिगण में पठित प्रथमान्त प्रातिपदिक से विकल्प से तद्धितसंज्ञक श, न, इलच् प्रत्यय हो। यथासंख्यमनुदेशः समानाम् इस परिभाषा से लोमादिगणपठित प्रातिपदिकों से विकल्प से श प्रत्यय, पामादिगण पठित प्रातिपदिकों से विकल्प से न प्रत्यय,

पिच्छादिगण पठित प्रातिपदिकों से विकल्प से इलच् प्रत्यय होता है दूसरे पक्ष में तो मतुप्-प्रत्यय होता है।

उदाहरण- लोमानि अस्य सन्ति इस विग्रह में लोमन् - शब्द का लोमादिगण में पाठ है। अतः लोमादिपामादिपिच्छादिभ्यः शनेलचः इस सूत्र से श प्रत्यय होता है।यह समुदाय तद्धितान्त है। अतः तद्धितान्त की प्रातिपदिक संज्ञा होने पर सुप् का लोप होकर लोमन् + श यह स्थिति होती है। स्वादिष्वसर्वनामस्थाने इस शास्त्र से लोमन् की पदसंज्ञा होती है। तत्पश्चात् न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य इस शास्त्र से नकार लोप होता है। तब विभक्ति कार्य होने पर लोमशः यह रूप है। श प्रत्यय के अभाव पक्ष में तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् इस शास्त्र से मतुप् प्रत्यय होता है। तत्पश्चात् अनुबन्ध लोप करने पर मकार को वकारादश होने पर विभक्ति कार्य और वर्णमेलन होने पर लोमवान् यह रूप है।

पाम अस्य अस्ति इस विग्रह में पामन् - शब्द का पामादिगण में पाठ है। अतः लोमादिपामादि पिच्छादिभ्यः शनेलचः इस सूत्र से न प्रत्यय होता है।यह समुदाय तद्धितान्त है। अतः तद्धितान्त की प्रातिपदिक संज्ञा होने पर सुप् का लोप होने पर पामन् + न यह स्थिति होती है। स्वादिष्वसर्वनामस्थाने इस शास्त्र से पामन् की पदसंज्ञा होती है। न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य इति शास्त्र से नकारलोप होने पर विभक्तिकार्य होकर पामनः यह रूप है। न प्रत्यय के अभाव पक्ष में तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् इस शास्त्र से मतुप्-प्रत्यय होता है। तत्पश्चात् अनुबन्धलोप होकर मकार को वकारादेश होने पर विभक्ति कार्य और वर्णमेलन होने से पामवान् यह रूप है।

पिच्छम् अस्य अस्ति इस विग्रह में पिच्छ शब्द का पिच्छादिगण में पाठ है। अतः लोमादिपामादि पिच्छादिभ्यः शनेलचः इस शास्त्र से इलच् प्रत्यय होता है। तत्पश्चात् अनुबन्धलोप होने पर इस तद्धितान्त समुदाय की प्रातिपदिक संज्ञा होने पर सुप् का लोप होने पर पिच्छ + इल यह स्थिति होती है। यचि भम् इस शास्त्र से पिच्छ शब्द की भसंज्ञा होती है। उसके बाद यस्येति च इस सूत्र से छकारोत्तर अकार का लोप होता है। तत्पश्चात् विभक्ति कार्य और वर्णमेलन से पिच्छिलः यह रूप होता है। इलच् प्रत्यय के अभाव पक्ष में तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् इस शास्त्र से मतुप् प्रत्यय होता है। तत्पश्चात् अनुबन्धलोप करने पर मकार को वकारादेश होने पर विभक्ति कार्य होकर पिच्छवान् यह रूप है।

29.8 प्रज्ञाश्रद्धार्चाभ्यो णः॥ (५.२.१०१)

सूत्रार्थ - प्रज्ञा, श्रद्धा और अर्चा प्रथमान्त प्रातिपदिकों से तदस्यास्त्यस्मिन्निति इस अर्थ में विकल्प से तद्धितसंज्ञक ण प्रत्यय होता है।

सूत्रव्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस शास्त्र में दो पद हैं। प्रज्ञा च श्रद्धा च अर्चा च प्रज्ञाश्रद्धार्चाः, ताभ्यः प्रज्ञाश्रद्धार्चाभ्यः यह इतरेतरद्वन्द्व है। प्रज्ञाश्रद्धार्चाभ्यः यह पञ्चम्यन्त पद है। णः यह तो प्रथमान्त पद है।

टिप्पणियाँ

तद्धिताः, प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, समर्थानां प्रथम द्वितीय ये अधिकार सूत्र आते हैं। तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् इस सूत्र से तद्, अस्य, अस्ति, अस्मिन् यह पद अनुवर्तित होता है। प्राणिस्थादातो लजन्यतरस्याम् यहाँ से अन्यतरस्याम् यह पद अनुवर्तित होता है अतः सूत्रार्थ होता है – प्रज्ञा, श्रद्धा और अर्चा प्रथमान्त प्रातिपदिकों से तदस्यास्त्यस्मिन्निति इस अर्थ में विकल्प से तद्धितसंज्ञक ण प्रत्यय होता है। ण प्रत्यय अभावपक्ष में तो मतुप् होता है।

उदाहरण – प्रज्ञा अस्मिन् अस्ति इस विग्रह में प्रज्ञाश्रद्धार्चाभ्यो णः इस सूत्र से ण प्रत्यय होता है। तत्पश्चात् अनुबन्धलोप होने पर प्राज्ञ+अ यह स्थिति है। यह समुदाय तद्धितान्त है। अतः प्रातिपदिकसंज्ञा और सुलोप होता है। तत्पश्चात् तद्धितेष्वचामादेः इस शास्त्र से आदिवृद्धि होती है। तब प्राज्ञ+अ इस स्थिति में यस्येति च इससे अकारलोप और विभक्ति कार्य होने पर प्राज्ञः यह रूप है। ण प्रत्यया अभावपक्ष में तो तु मतुप् होने पर प्रज्ञावान् यह रूप है।

श्रद्धा अस्मिन् अस्ति इस विग्रह में प्रज्ञाश्रद्धार्चाभ्यो णः इस सूत्र से ण प्रत्यय, अनुबन्धलोप और आदिवृद्धि होती है। तत्पश्चात् श्राद्ध+अ यह स्थिति होती है। तत्पश्चात् प्रक्रियाकार्य तथा वर्णमेलन से श्राद्धः यह रूप है। ण प्रत्यय अभावपक्ष में तो मतुप् होने पर श्रद्धावान् यह रूप है।

अर्चा अस्मिन् अस्ति इस विग्रह में प्रज्ञाश्रद्धार्चाभ्यो णः इस सूत्र से ण प्रत्यय, अनुबन्धलोप और आदिवृद्धि होती है। तत्पश्चात् आर्चा+अ इस स्थिति में यस्येति च इस से आकारलोप और विभक्ति कार्य होने पर आर्चः यह है। ण प्रत्यय अभावपक्ष में तो मतुप् होने पर अर्चावान् यह रूप है।

29.9 दन्त उन्नत उरच्॥ (५.२.१०६)

सूत्रार्थ – उन्नत दन्त गम्यमान होने पर प्रथमान्त दन्त प्रातिपदिक से तदस्यास्त्यस्मिन्निति इस अर्थ में तद्धितसंज्ञक उरच् प्रत्यय होता है।

सूत्रव्याख्या – यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में तीन पद हैं। दन्ते यह सप्तम्यन्त पद है। उन्नते यह सप्तम्यन्त पद है। उरच् यह प्रथमान्त पद है।

तद्धिताः, प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, समर्थानां प्रथमाद्वा ये अधिकार सूत्र आते हैं। तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् इस सूत्र से तद्, अस्य, अस्ति, अस्मिन् यह पद अनुवर्तित होता है। प्रकृत में दन्तपद की आवृत्ति की जाती है। और वह पञ्चम्यन्त पद है। अतः सूत्र का सामान्यार्थ है – उन्नत दन्त गम्यमान होने पर प्रथमान्त दन्त प्रातिपदिक से तदस्यास्त्यस्मिन्निति इस अर्थ में तद्धितसंज्ञक उरच् प्रत्यय होता है।

उदाहरण– उन्नताः दन्ताः अस्य सन्ति इस अर्थ में दन्त उन्नत उरच् इस शास्त्र से उरच् प्रत्यय होता है। तत्पश्चात् अनुबन्धलोप होने पर दन्त जस् उर यह स्थिति होती है। यह समुदाय तद्धितान्त है। अतः प्रातिपदिकसंज्ञा होती है। तत्पश्चात् सुप् का लोप होने पर दन्त + उर यह स्थिति होती है। उसके बाद यस्येति च इस से तकारोत्तरवर्ती अकार का लोप होने पर विभक्ति कार्य और वर्णमेलन से दन्तुरः यह रूप है।

पाठगत प्रश्न 29.2

1. प्राणिस्थादातो लजन्यतरस्याम् इस सूत्र का अर्थ लिखिए।
2. प्राणिस्थादातो लजन्यतरस्याम् यह किस प्रकार का सूत्र है?
3. लोमादिपामादिपिच्छादि से कौन से प्रत्यय होते हैं?
4. प्राज्ञः यहाँ किस सूत्र से कौन सा प्रत्यय होता है?
5. उन्नत दन्त गम्यमान होने पर कौन सा प्रत्यय होता है?
6. प्रज्ञाश्राद्धार्चाभ्यः यहाँ कौन सा समास है?

29.10 ऊषसुषिमुष्कमधोः रः॥ (५.२.१०७)

सूत्रार्थ – ऊष, सुषि, मुष्क और मधु इन प्रथमान्त प्रातिपदिकों से तद्धितसंज्ञक र प्रत्यय हो।

सूत्रव्याख्या – यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में पद द्वय है। ऊषश्च सुषिश्च मुष्कश्च मधु च इति ऊषसुषिमुष्कमधु, तस्मात् ऊषसुषिमुष्कमधोः यह समाहारद्वन्द्व है। ऊषसुषिमुष्कमधोः यह पञ्चम्यन्त पदम है। रः यह प्रथमान्त पद है।

तद्धिताः, प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, समर्थानां प्रथम द्वितीय ये अधिकार सूत्र आते हैं। तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् इस सूत्र से तद्, अस्य, अस्ति, अस्मिन् यह पद अनुवर्तित होता है। अतः सूत्रार्थ होता है – ऊष, सुषि, मुष्क और मधु इन प्रथमान्त प्रातिपदिकों से तद्धितसंज्ञक र प्रत्यय हो।

उदाहरण – ऊषः अस्य अस्ति इस विग्रह में ऊषसुषिमुष्कमधोः रः इस शास्त्र से र प्रत्यय होता है। यह समुदाय तद्धितान्त है। अतः तद्धितान्त होने से प्रातिपदिकसंज्ञा और सुलोप होता है। तत्पश्चात् विभक्ति कार्य होकर वर्णमेलन से ऊषरः यह रूप है।

सुषिः अस्य अस्ति इस विग्रह में ऊषसुषिमुष्कमधोः रः इस शास्त्र से र प्रत्यय होने पर प्रातिपदिकसंज्ञा, सुलोप और विभक्ति कार्य होने पर सुषिरः यह रूप है।

मुष्कः अस्य अस्ति इस विग्रह में ऊषसुषिमुष्कमधोः रः इस शास्त्र से र प्रत्यय होने पर प्रातिपदिकसंज्ञा, सुलोप और विभक्ति कार्य होने पर मुष्करः यह रूप है।

मधु अस्य अस्ति इस विग्रह में ऊषसुषिमुष्कमधोः रः इस शास्त्र से र प्रत्यय होने पर प्रातिपदिकसंज्ञा, सुलोप और विभक्ति कार्य होने पर मधुरः यह रूप है।

29.11 केशाद्वोऽन्यतरस्याम्॥ (५.२.१०९)

सूत्रार्थ – प्रथमान्त केशप्रातिपदिक से तदस्यास्त्यस्मिन्निति अर्थ में विकल्प से तद्धितसंज्ञक व प्रत्यय हो।

टिप्पणियाँ

सूत्रव्याख्या – यह विधिसूत्रम् है। इस सूत्र में तीन पद हैं। केशात् यह पञ्चम्यन्त पद है। वः यह प्रथमान्त पद है। अन्यतरस्याम् यह अव्ययपद है।

तद्धिताः, प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, समर्थानां प्रथम द्वितीय ये अधिकार आते हैं। तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् इस सूत्र से तद्, अस्य, अस्ति, अस्मिन् यह पद अनुवर्तित होता है। अतः सूत्रार्थ होता है – प्रथमान्त केश प्रातिपदिक से तदस्यास्त्यस्मिन्निति अर्थ में विकल्प से तद्धितसंज्ञक व प्रत्यय हो।

शङ्का – प्राणिस्थादातो लजन्यतरस्याम् यहाँ से अन्यतरस्याम् इस पद की अनुवृत्ति सम्भव होती है। तथापि प्रकृतसूत्र में अन्यतरस्याम् यह पद किसलिए है।

समाधान – प्रकृतसूत्र में अन्यतरस्याम् यह पद नहीं दिया जाता तो व प्रत्यय के अभावपक्ष में केवल मतुप् प्रत्यय होता है। परन्तु व प्रत्यय के अभावपक्ष में भी मतुप् प्रत्यय के साथ अत इनिठनौ इस सूत्र से प्राप्त इनि और ठन् के संग्रहण के लिए अन्यतरस्याम् है।

उदाहरण – केशाः अस्य सन्ति इस विग्रह में केशाद्वोऽन्यतरस्याम् इस शास्त्र से व प्रत्यय होता है। यह समुदाय तद्धितान्त है। अतः तद्धितान्त प्रातिपदिकसंज्ञा और सुलोप होता है। तत्पश्चात् केश + व इस स्थित में विभक्ति कार्य होने पर केशवः यह रूप है। व प्रत्यय के अभावपक्ष में तो तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् इस सूत्र से मतुप् प्रत्यय, विभक्ति कार्य होने पर केशवान् यह रूप है। और पुनः व प्रत्यय के अभावपक्ष में अत इनिठनौ इस सूत्र से इन्-प्रत्यय और ठन् प्रत्यय होते हैं। तत्पश्चात् अनुबन्धलोप होने पर विभक्ति कार्य और वर्णमेलन होने से केशी, केशिकः रूप होते हैं।

29.12 अत इनिठनौ॥ (५.२.११५)

सूत्रार्थ – अदन्त प्रातिपदिक से तदस्यास्त्यस्मिन्निति इस अर्थ में विकल्प से तद्धितसंज्ञक इनि और ठन् प्रत्यय होते हैं।

सूत्रव्याख्या – यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में पद द्वय है। अत यह पञ्चम्यन्त पद है। इनिश्च ठन् च इति इनिठनौ यह इतरेतरद्वन्द्व है। इनिठनौ यह प्रथमान्त पद है।

तद्धिताः, प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, समर्थानां प्रथम द्वितीय इति ये अधिकार सूत्र आते हैं। तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् इस सूत्र से तद्, अस्य, अस्ति, अस्मिन् यह पद अनुवर्तित होता है। प्राणिस्थादातो लजन्यतरस्याम् इससे अन्यतरस्याम् यह पद अनुवर्तित होता है। अतः यह प्रातिपदिक का विशेषण है। अतः येन विधिस्तदन्तस्य इस सूत्र से तदन्तविधि में अदन्तात् प्रातिपदिकात् यह अर्थ आता है। अतः सूत्रार्थ होता है – अदन्त प्रातिपदिक से तदस्यास्त्यस्मिन् इस अर्थ में विकल्प से तद्धितसंज्ञक इनि और ठन् प्रत्यय होते हैं। विकल्प ग्रहण से इनि और ठन् के अभाव में मतुप् प्रत्यय होता है।

उदाहरण – दण्डः अस्य अस्ति इस विग्रह में दण्ड इस अदन्त प्रातिपदिक से अत इनिठनौ इस सूत्र से इनिप्रत्यय होता है। यह समुदाय तद्धितान्त है। अतः प्रातिपदिकसंज्ञा और सुलोप होता है।

तत्पश्चात् दण्ड+इन् इस स्थिति में यस्येति च इस से डकारोत्तरवर्ती अकार का लोप होने पर दण्डिन् यह स्थिति होती है। तत्पश्चात् विभक्तिकार्य में सौ च इस से उपधादीर्घ और सुलोप होने पर पदान्त नकार का लोप होने पर दण्डी यह रूप है।

दण्डः अस्य अस्ति इस विग्रह में दण्ड यह अदन्त प्रातिपदिक है। अत इनिठनौ इससे ठन्प्रत्यय होता है। उसके बाद अनुबन्धलोप करने पर दण्ड+ठ यह स्थिति होती है। तत्पश्चात् यह समुदाय तद्धितान्त है। अतः प्रातिपदिकसंज्ञा और सुलोप होता है। उसके बाद दण्ड+ठ इस स्थिति में ठस्येकः इस सूत्र से इकादेश होने पर दण्ड+इक यह स्थिति है। तत्पश्चात् यस्येति च इससे डकारोत्तरवर्ती अकार का लोप और विभक्ति कार्य होने पर दण्डिकः यह रूप है।

अत इनिठनौ इस सूत्र से विकल्प से इनि और ठन् का विधान होने से इनिठन्प्रत्यय के अभावपक्ष में मतुप्-प्रत्यय होता है। तब दण्डवान् यह रूप है। दण्ड इस अदन्त प्रातिपदिक से दण्डी, दण्डिकः, दण्डवान् ये तीन रूप होते हैं। अतः अदन्त प्रातिपदिकों से मतुप्, इन्, ठन् ये तीन प्रत्यय होते हैं।

29.13 रूपादाहतप्रशंसयोर्यप्॥ (५.२.१२०)

सूत्रार्थ – आहतार्थ और प्रशंसार्थ में वर्तमान प्रथमान्त रूप प्रातिपदिक से तदस्यास्त्यस्मिन्निति इस अर्थ में तद्धितसञ्ज्ञक यप् प्रत्यय होता है।

सूत्रव्याख्या – यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में तीन पद हैं। रूपाद् यह पञ्चम्यन्त पद है। आहतं च प्रशंसा च इति आहतप्रशंसे, तयोः आहतप्रशंसयोः यह इतरेतरद्वन्द्व है। आहतप्रशंसयोः यह सप्तम्यन्त पद है। यप् यह प्रथमान्त पद है।

तद्धिताः, प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, समर्थानां प्रथम द्वितीय ये अधिकार सूत्र आते हैं। तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् इस सूत्र से तद्, अस्य, अस्ति, अस्मिन् यह पद अनुवर्तित है। अतः सूत्रार्थ होता है – आहतार्थ में और प्रशंसार्थ में वर्तमान प्रथमान्त रूप प्रातिपदिक से तदस्यास्त्यस्मिन्निति इस अर्थ में तद्धितसंज्ञक यप् प्रत्यय होता है।

उदाहरण – आहतं रूपमस्य अस्ति यह विग्रह होने पर आहतार्थ में विद्यमान रूप इस प्रथमान्त प्रातिपदिक से मत्वर्थ में रूपादाहतप्रशंसयोर्यप् इस सूत्र से यप्-प्रत्यय और अनुबन्धलोप होता है। यह समुदाय तद्धितान्त है। अतः प्रातिपदिकसंज्ञा और सुप् का लोप होता है। तब रूप+य इस स्थिति में यस्येति च इस से अकार का लोप होने पर पुनः एकदेशविकृतमनन्यवत् इस न्याय से विभक्ति कार्य होने पर रूप्यम् यह रूप है। आहतं रूपमस्य अस्ति- रूप्यः कार्षायणः।

प्रशस्तं रूपमस्य अस्ति इस विग्रह में प्रशंसार्थ में विद्यमान रूप इस प्रथमान्त प्रातिपदिक से मत्वर्थ में रूपादाहतप्रशंसयोर्यप् इस सूत्र से यप्, अनुबन्धलोप, तद्धितान्त होने से प्रातिपदिक संज्ञा होने और सुप् का लोप होने पर रूप+य इस स्थिति में यस्येति च से अकार का लोप होने पर पुनः एकदेशविकृतमनन्यवत् इस न्याय से विभक्ति कार्य होने पर रूप्यम् यह रूप है। प्रशस्तं रूपमस्य अस्ति – रूप्यो गौः।

29.14 व्रीह्यादिभ्यश्च॥ (५.२.११६)

सूत्रार्थ – व्रीह्यादि प्रथमान्त प्रातिपदिकों से तदस्यास्त्यस्मिन् इस अर्थ में इनि और ठन् प्रत्यय विकल्प से होते हैं।

सूत्रव्याख्या – यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में पद द्वय है। व्रीहिः आदिर्येषां ते व्रीह्यादयः, तेभ्यः व्रीह्यादिभ्यः यह बहुव्रीहिसमासान्त पद है। च यह अव्ययपद है।

तद्धिताः, प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, समर्थानां प्रथमाद्वा ये अधिकार सूत्र आते हैं। तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् इस सूत्र से तद्, अस्य, अस्ति, अस्मिन् यह पद अनुवर्तित होता है। प्राणिस्थादातो लजन्यतरस्याम् यहाँ से अन्यतरस्याम् यह पद अनुवर्तित होता है। व्रीह्यादिभ्यः इसके साथ प्रथमान्तस्य प्रातिपदिकस्य इसका सम्बन्धवश वचनपरिवर्तन होने से प्रथमान्तेभ्यः प्रातिपदिकेभ्यः:यह अर्थ आता है। अतः सूत्रार्थ होता है – व्रीह्यादि प्रथमान्त प्रातिपदिकों से तदस्यास्त्यस्मिन् इस अर्थ में इनि और ठन् प्रत्यय विकल्प से होते हैं। दूसरे पक्ष में मतुप् प्रत्यय होता है। चकार से मतुप्-प्रत्यय का संग्रहण किया जाता है।

उदाहरण – व्रीहयः सन्त्यस्मिन् इस विग्रह में व्रीहि प्रातिपदिक से व्रीह्यादिभ्यश्च इस सूत्र से इनिप्रत्यय और ठन्प्रत्यय होता है। इनि प्रत्यय पक्ष में अनुबन्धलोप होने पर इनिप्रत्यय का तद्धितान्त होने से प्रातिपदिकसंज्ञा और सुलोप होता है। यस्येति च इस से इकार का लोप होने पर विभक्ति कार्य में व्रीही यह रूप है।

ठन्प्रत्यय पक्ष में तो व्रीहि प्रातिपदिक से प्रकृतशास्त्र से ठन्प्रत्यय होता है। तत्पश्चात् अनुबन्धलोप, प्रातिपदिकसंज्ञा और सुलोप होता है। तत्पश्चात् ठस्येकः इस शास्त्र से ठकार को इकादेश होता है। उसके बाद यस्येति च इस शास्त्र से इकार का लोप होने पर व्रीहिकः यह रूप है। चकार से मतुप्-प्रत्यय के संग्रहण से मतुप् होने पर व्रीहिमान् यह रूप है।

पाठगत प्रश्न 29.3

1. ऊषसुषिमुष्कमधोः सूत्र से कौन सा प्रत्यय होता है?
2. मधुरः यहाँ लौकिक विग्रह क्या है?
3. केशवः यहाँ किस सूत्र से कौन सा प्रत्यय है?
4. अदन्त प्रातिपदिक से कौन सा प्रत्यय होता है?
5. आहतप्रशंसयोः यहाँ कौन सी विभक्ति है?
6. व्रीह्यादिभ्यः सूत्र से कौन से प्रत्यय होते हैं?

29.15 अस्मायामेधास्रजो विनिः॥ (५.२.१२१)

सूत्रार्थ – असन्त माया-मेधा-स्रज् इन प्रथमान्त प्रातिपदिकों से तदस्यास्त्यस्मिन् इस अर्थ में तद्धितसंज्ञक विनि प्रत्यय विकल्प से होता है।

सूत्रव्याख्या – यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में पद द्वय है। अस् च माया च मेधा च स्रक् च इति अस्मायामेधास्रज्, तस्मात् अस्मायामेधास्रजः यहाँ समाहारद्वन्द्व है। अस्मायामेधास्रजः यह पञ्चम्यन्त पद है। विनिः यह प्रथमान्त पद है।

तद्धिताः, प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, समर्थानां प्रथम द्वितीय अधिकार सूत्र आते हैं। तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् इस सूत्र से तद्, अस्य, अस्ति, अस्मिन् यह पद अनुवर्तित होता है। प्राणिस्थादातो लजन्यतरस्याम् इससे अन्यतरस्याम् यह पद अनुवर्तित होता है। अस् यह प्रातिपदिक का विशेषण है। अत येन विधिस्तदन्तस्य इस सूत्र से असन्तं प्रातिपदिकम् यह प्राप्त होता है। अतः सूत्रार्थ होता है – असन्त माया-मेधा-स्रज् इन प्रथमान्त प्रातिपदिकों से तदस्यास्त्यस्मिन् इस अर्थ में तद्धितसंज्ञक विनि प्रत्यय विकल्प से होता है। अन्यतरस्याम् इस पदस्य ग्रहण होने से विनिप्रत्यय अभावपक्ष में मतुप्-प्रत्यय होता है।

उदाहरण – यशः अस्य अस्ति इस विग्रह में यशस् यह असन्त प्रातिपदिक है। अतः अस्मायामेधास्रजो विनिः इस शास्त्र से विनिप्रत्यय होता है। तब अनुबन्धलोप होने पर यशस्+विन् यह स्थिति होती है। यह समुदाय तद्धितान्त है। अतः प्रातिपदिकसंज्ञा और सुलोप होता है। तत्पश्चात् यशस्विन् यह होने पर एकदेशविकृतमनन्यवत् इस न्याय से प्रातिपदिकसंज्ञा होती है। तब सुप्रत्यय होता है। तत्पश्चात् सौ च इस शास्त्र से उपधादीर्घ होता है। उसके बाद अपृक्त सकार और पदान्त नकार का लोप तथा वर्णमेलन होने पर यशस्वी यह रूप है। विनिप्रत्यय के अभावपक्ष में मतुप्-प्रत्यय होने पर यशस्वान् यह रूप है। इस प्रकार ही मायामेधास्रज् इन प्रातिपदिकों से विनिप्रत्यय करने पर मायावी, मेधावी, स्रग्वी ये रूप होते हैं। विनिप्रत्यय के अभावपक्ष मे तो मतुप्-प्रत्यय होने पर मायावान्, मेधावान्, स्रग्वान् ये रूप हैं।

29.16 वाचो ग्मिनिः॥ (५.२.१२४)

सूत्रार्थ – प्रथमान्त प्रातिपदिक वाच् तदस्यास्त्यस्मिन् इस अर्थ में तद्धितसंज्ञक ग्मिनि प्रत्यय हो।

सूत्रव्याख्या – यह विधि सूत्र है। इसमें दो पद हैं। वाचः यह पञ्चम्यन्त पद है। ग्मिनिः यह प्रथमान्त पद है।

तद्धिताः, प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, समर्थानां प्रथम द्वितीय ये अधिकार सूत्र आते हैं। तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् इस सूत्र से तद्, अस्य, अस्ति, अस्मिन् यह पद अनुवर्तित होता है। अतः सूत्रार्थ होता है – प्रथमान्त प्रातिपदिक वाच् से तदस्यास्त्यस्मिन् अर्थ में तद्धितसंज्ञक ग्मिन प्रत्यय हो।

टिप्पणियाँ

उदाहरण – प्रशस्ता वाग् अस्य अस्ति इस विग्रह में प्रथमान्त प्रातिपदिक वाच् से तदस्य अस्ति इस अर्थ में वाचो ग्मिनिः इस सूत्र से ग्मिनिप्रत्यय होता है। तत्पश्चात् अनुबन्धलोप होने पर तद्धितान्त होने से प्रातिपदिकसंज्ञा होने पर सुप् का लोप होने पर वाच् + ग्मिन् यह स्थिति होती है। ततः स्वादिष्वसर्वनामस्थाने इस सूत्र से पदसंज्ञा होती है। उसके बाद चोः कुः इससे पदान्त चकार का ककार होता है। उसके बाद झलां जशोऽन्ते इस सूत्र से ककार का गकार होता है। तत्पश्चात् प्रातिपदिकसंज्ञा होने और विभक्ति कार्य होने पर वर्णमेलन से वाग्ग्मी यह रूप है।

29.17 आलजाटचौ बहुभाषिणि॥ (५.२.१२५)

सूत्रार्थ – बहुभाषण अर्थ में प्रथमान्त प्रातिपदिक वाच् से तदस्यास्त्यस्मिन् अर्थ में तद्धितसंज्ञक आलच् तथा आटच् प्रत्यय होते है।

सूत्रव्याख्या – यह विधि सूत्र है। इसमें सूत्र में दो पद हैं। आलच् च् आटच् च इति आलजाटचौ यह इतरेतरद्वन्द्व समास है। आलजाटचौ यह प्रथमान्त पद है। बहुभाषिणि यह सप्तम्यन्त पद है।

तद्धिताः, प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, समर्थानां प्रथम द्वितीय ये अधिकार सूत्र आते हैं। तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् इस सूत्र से तद्, अस्य, अस्ति, अस्मिन् यह पद अनुवर्तित होता है। वाचो ग्मिनिः इस सूत्र से वाचः यह पद अनुवर्तित होता है। अतः सूत्रार्थ होता है – बहुभाषिणी अर्थ में प्रथमान्त वाच् इस प्रातिपदिक से तदस्यास्त्यस्मिन् इस अर्थ में तद्धितसंज्ञक आलच् और आटच् प्रत्यय होते हैं। वार्तिककार के मत से कुत्सित होने पर यह कहना चाहिए। उससे जो व्यक्ति बहुत बुरा बोलता है,उसके लिए वाचालः, वाचाटः यह प्रयोग होता है। जो बहुत बोलता है किन्तु अच्छा बोलता है, तो उसके लिए वाग्ग्मी यह प्रयोग होता है।

उदाहरण– कुत्सितं बहु भाषते इस विग्रह में प्रथमान्त वाच् इस प्रातिपदिक से मत्वर्थ में और बहुभाषण अर्थ में आलजाटचौ बहुभाषिणि इस सूत्र से आलच् तथा आटच् होते हैं। आलच् प्रत्यय पक्ष में अनुबन्धलोप होने पर वाच्+आल यह स्थिति होती है। यह समुदाय तद्धितान्त है। अतः प्रातिपदिकसंज्ञा और सुप् का लोप होता है। तत्पश्चात् प्रातिपदिकसंज्ञा और विभक्ति कार्य होने पर वर्णमेलन से वाचालः यह रूप है।

आटच्प्रत्यय पक्ष में अनुबन्धलोप होने पर वाच्+आट यह स्थिति होती है। यह समुदाय तद्धितान्त है। अतः प्रातिपदिकसंज्ञा और सुप् का लोप होता है। तत्पश्चात् प्रातिपदिकसंज्ञा और विभक्ति कार्य होने पर वर्णमेलन से वाचाटः यह रूप है।

29.18 अर्शआदिभ्योऽच्॥ (५.२.१२७)

सूत्रार्थ – अर्श आदि प्रथमान्त प्रातिपदिकों से तदस्यास्त्यस्मिन् इस अर्थ में तद्धितसंज्ञक अच्प्रत्यय होता है।

सूत्रव्याख्या – इस सूत्र से अच् का विधान होता है। अतः यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में पदद्वय है। अर्शस् आदिर्येषां ते अर्शादयस्तेभ्यः अर्शादिभ्यः यह बहुव्रीहिसमास है। अर्शआदिभ्यः यह पञ्चम्यन्त पद है। अच् यह प्रथमान्त पद है।

तद्धिताः, प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, समर्थानां प्रथम द्वितीय ये अधिकार सूत्र आते हैं। तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् इति सूत्रात् तद्, अस्य, अस्ति, अस्मिन् यह पद अनुवर्तित होता है। अतः सूत्रार्थ होता है– अर्शआदि प्रथमान्त प्रातिपदिकों से तदस्यास्त्यस्मिन् इस अर्थ में तद्धितसंज्ञक अच्प्रत्यय होता है। यह आकृतिगण है। अर्थात् जिन शब्दों का अर्शआदिगण में पाठ नहीं है, तथापि अर्शादिगण में पढ़े गए शब्दों के समान दृष्टिगोचर होता है। अतः अर्शआदिगण आकृतिगण स्वीकार होने से प्रकृतसूत्र से अच् प्रत्यय होता है।

उदाहरण – अर्शांसि विद्यन्ते यस्य इस विग्रह में अर्शआदिगण में पठित अर्शस् इस शब्द का अर्शआदिभ्योऽच् इति सूत्र से अच्–प्रत्यय होता है। तत्पश्चात् अनुबन्धलोप होने पर तद्धितान्तस् की प्रातिपदिकसंज्ञा और सुलोप होता है। तत्पश्चात् अर्शस् + अ इस स्थिति में एकदेशविकृतमनन्यवत् इस न्याय से तत्पश्चात् प्रातिपदिकसंज्ञा तथा विभक्तिकार्य होने पर वर्णमेलन से अर्शसः यह रूप होता है।

29.19 सुखादिभ्यश्च॥ (५.२.१३१)

सूत्रार्थ – सुखादिगण में पठित प्रथमान्त प्रातिपदिकों से तदस्यास्त्यस्मिन् अर्थ में तद्धितसंज्ञक इनि प्रत्यय होता है।

सूत्रव्याख्या – प्रकृतसूत्र से इनि प्रत्यय का विधान है। इसलिए यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। सुखम् आदिर्येषां ते सुखादयः, तेभ्यः सुखादिभ्यः यह बहुव्रीहिसमासान्त पद है। सुखादिभ्यः इति पञ्चम्यन्त पद है। च यह अव्ययपद है।

तद्धिताः, प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, समर्थानां प्रथमाद्वा ये अधिकार सूत्र आते हैं। तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् इति सूत्रात् तद्, अस्य, अस्ति, अस्मिन् यह पद अनुवर्तित होता है। द्वन्द्वोपतापगर्ह्यात् प्राणिस्थादिनिः इस सूत्र से इनिः अनुवर्तित होता है। अतः सूत्रार्थ होता है – सुखादिगण में पठित प्रथमान्त प्रातिपदिकों से तदस्यास्त्यस्मिन् अर्थ में तद्धितसंज्ञक इनि प्रत्यय होता है।

शङ्का– सुखादिप्रातिपदिक अदन्त है। अतः अदन्तत्व होने से अत इनिठनौ इस सूत्र से इनि प्रत्यय होता है। तो सुखादिभ्यश्च यह शास्त्र किसलिए किया गया है।

समाधान – अत इनिठनौ इस सूत्र से अदन्त प्रातिपदिक से इनिप्रत्यय और ठन्प्रत्यय होते हैं। सुखादि प्रातिपदिकों से केवल इनिप्रत्यय हो यह चिन्तन करके यह प्रकृतशास्त्र है। इन अदन्तप्रातिपदिकों से इनि प्रत्यय और ठन्प्रत्यय प्राप्त होने पर सुखादिभ्यः इस सूत्र से केवल इनि प्रत्यय होता है, ठन्प्रत्यय नहीं।

उदाहरण – सुखम् अस्य अस्ति इस विग्रह में सुखादिगण में पठित प्रातिपदिक सुख यह है अतः सुखादिभ्यश्च इस सूत्र से इनिप्रत्यय होता है। तत्पश्चात् अनुबन्धलोप होने पर तद्धितान्त होने के

टिप्पणियाँ

कारण प्रातिपदिक संज्ञा और सुप् का लोप होने पर सुख + इन् यह स्थिति होती है। एकदेशविकृत मनन्यवत् इति न्याय से तत्पश्चात् प्रातिपदिक संज्ञा होने व विभक्ति कार्य होने पर सुखी यह रूप है।

29.20 धर्मशीलवर्णान्ताच्च॥ (५.२.१३२)

सूत्रार्थ – प्रथमान्त धर्मशीलवर्णान्त प्रातिपदिकों से तदस्यास्त्यस्मिन् अर्थ में तद्धितसंज्ञक इनिप्रत्यय हो।

सूत्रव्याख्या – यह विधि सूत्र है इस सूत्र में दो पद हैं। धर्मश्च शीलञ्च वर्णश्च धर्मशीलवर्णास्ते अन्ते यस्य स धर्मशीलवर्णान्तः, तस्मात् धर्मशीलवर्णान्तात् यह द्वन्द्वगर्भबहुव्रीहिसमासान्त पद है। धर्मशीलवर्णान्तात् यह पञ्चम्यन्त पद है। च यह अव्ययपद है।

तद्धिताः, प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, समर्थानां प्रथमाद्वा ये अधिकार सूत्र आते हैं। तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् इस सूत्र से तद्, अस्य, अस्ति, अस्मिन् यह पद अनुवर्तित होता है। द्वन्द्वोपतापगर्ह्यात् प्राणिस्थादिनिः इस सूत्र से इनिः अनुवर्तित होता है। अतः सूत्रार्थ होता है – प्रथमान्त धर्मशीलवर्णान्त प्रातिपदिकों से दस्यास्त्यस्मिन् अर्थ में तद्धितसंज्ञक इनिप्रत्यय हो।

उदाहरण – ब्राह्मणधर्मः अस्य अस्ति इस विग्रह में ब्राह्मणधर्म यह प्रातिपदिक धर्मशब्दान्त है। अतः धर्मशीलवर्णान्ताच्च इस शास्त्र से इनिप्रत्यय होता है। तत्पश्चात् अनुबन्धलोप, तद्धितान्त की प्रातिपदिकसंज्ञा सुलोप होने पर ब्राह्मणधर्म + इन् यह स्थिति होती है। तत्पश्चात् यस्येति च इस से मकारोत्तर अकार का लोपे व विभक्तिकार्य होने पर ब्राह्मणधर्मी यह रूप है। इस प्रकार ही शीलान्तशब्द और वर्णान्तशब्दों का धर्मशीलवर्णान्ताच्च इस सूत्र से इनिप्रत्यय होने पर ब्राह्मणशील, ब्राह्मणधर्मी इत्यादि रूप हैं।

29.21 अहंशुभमोर्युस्॥ (५.२.१४०)

सूत्रार्थ – अहम् और शुभम् इन दोनों अव्ययों से तदस्यास्त्यस्मिन् अर्थ में तद्धितसंज्ञक युस्प्रत्यय होता है।

सूत्रव्याख्या – यह विधि सूत्र है। अहं च शुभं च इति अहंशुभमौ, तयोः अहंशुभयोः इस प्रकार इतरेतरद्वन्द्व समास है। अहंशुभयोः यह षष्ठ्यन्त पद है। परन्तु इस सूत्र में पञ्चम्यर्थ में षष्ठी प्रयोग होता है। युस् यह प्रथमान्त पद है।

तद्धिताः, प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, समर्थानां प्रथम द्वितीय ये अधिकार सूत्र आते हैं। तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् इस सूत्र से तद्, अस्य, अस्ति, अस्मिन् यह पद अनुवर्तित होता है। अहंशुभम् इसका वयं विभक्तिप्रतिरूप अव्यय है। अतः सूत्रार्थ होता है – अहम् तथा शुभम् इन दोनों अव्ययों से तदस्यास्त्यस्मिन् अर्थ में तद्धितसंज्ञक युस्प्रत्यय होता है।

उदाहरण – अहम् अस्य अस्ति इस विग्रह में अहम् यह मकारान्त अव्यय है। अतः अहंशुभमोर्युस् इस सूत्र से युस् प्रत्यय होता है। तत्पश्चात् अनुबन्धलोप होने पर अहम् + यु यह स्थिति होती

है। यह समुदाय तद्धितान्त है। अतः प्रातिपदिकसंज्ञा और सुलोप होता है। तत्पश्चात् यचि भम् इति सूत्र से भसंज्ञा प्राप्त होती है। तत्पश्चात् सिति च इस सूत्र के द्वारा भसंज्ञा को बांधकर पदसंज्ञा का विधान किया जाता है। अहम् इसके मकार के पदान्त होने से मोऽनुस्वारः इस सूत्र से अनुस्वार होने पर अथवा पदान्तस्य इस शास्त्र से अनुस्वार का वैकल्पिक परसवर्ण होने पर अहँय्युः, अहंयुः यह दो रूप होते हैं।

एवमेव शुभम् अस्य अस्ति इस विग्रह में शुभम् यह मकारान्त अव्ययत्व है। अतः अहंशुभमोर्युस् इस सूत्र से युस्-प्रत्यय होता है। तत्पश्चात् अनुबन्धलोप होने पर शुभम् + यु यह स्थिति होती है। यह समुदाय तद्धितान्त है। अतः प्रातिपदिकसंज्ञा और सुलोप होता है तत्पश्चात् यचि भम् इस सूत्र से भसंज्ञा प्राप्त होती है। तत्पश्चात् सिति च इस सूत्र से भसंज्ञा को बांध कर पदसंज्ञा का विधान होता है। शुभम् इसके मकार का पदान्त होने से मोऽनुस्वारः इस सूत्र से अनुस्वार होने पर अथवा पदान्तस्य इस शास्त्र से अनुस्वार का वैकल्पिक परसवर्ण होने पर शुभँय्युः, शुभंयुः यह दो रूप होते है।

पाठगत प्रश्न 29.4

1. 'विनिप्रत्ययविधायक' सूत्र कौन सा है?
2. वाग्मी यहाँ किस सूत्र से कौन सा प्रत्यय है?
3. वाचालः नाम कौन है?
4. अर्शादि से कौन सा प्रत्यय होता है?
5. सुखी यहाँ किस सूत्र से कौन सा प्रत्यय है?
6. अहंशुभमोर्युस् इस का सूत्रार्थ क्या है?

पाठ का सार

तद्धिताः इसके अधिकार में बहुत प्रत्यय विधान किए जाते है। उनमें मतुप्-प्रत्यय भी कोई तद्धितप्रत्यय होता है। प्रायः तद् अस्य अस्ति उत तद् अस्मिन् अस्ति इस अर्थ में मतुप्-प्रत्यय विधान किए जाते हैं। इस अर्थ में ही मतुप्, इनि, ठन्, यप्, विनि, अच्, आटच्, आलच्, युस् ये प्रत्यय विधान किए जाते हैं। यथा- रसः अस्य अस्मिन् वा अस्ति इस अर्थ में रसवान् यह रूप होता है और तद् अस्य अस्मिन् वा अस्ति इस अर्थ में न केवल मतुप्-प्रत्यय होता है अपितु लच्, अच्, इनि, ठन् ये प्रत्यय भी होते हैं। परन्तु मतुप्-प्रत्यय का आधिक्य और प्राथम्य प्रयोग होने से मतुपर्थीयप्रकरणम यह नाम है। इस प्रकरण में गुणवचन प्रातिपदिकों तदस्य अस्मिन् वा अस्ति इस अर्थ में जो मतुप्-प्रत्यय विधान किए जाते हैं। उनका गुणवचनेभ्यो मतुपो लुगिष्ट इस से मतुप्-प्रत्ययों का लोप होता है। जैसे शुक्लः। पुनः ग्मिनि, आलच्, आटच् इत्यादि प्रत्यय भी होते हैं। यथा वाक्

अस्य अस्ति इस अर्थ में ग्मिनि-प्रत्यय होने पर वाग्ग्मी यह रूप है। कुत्सितं बहु भाषते इस विग्रह में आलच्-प्रत्यय और आटच्-प्रत्यय होने पर वाचाल:, वाचाट: इत्यादि रूप होते हैं और अहं शुभं इन दोनों अव्ययों से युस्-प्रत्यय होता है इन सभी प्रत्ययों को स्वीकार करके मतुपर्थीयप्रकरण यह है।

पाठांत प्रश्न

1. 'तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप्' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
2. गोमान् इस रूप को सिद्ध कीजिए।
3. 'प्राणिस्थादातो लजन्यतरस्याम्' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
4. लोमश: इस रूप को सिद्ध कीजिए।
5. 'लोमादिपामादिपिच्छादिभ्य: शनेलच:' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
6. 'अत इनिठनौ' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
7. दण्डी इस रूप को सिद्ध कीजिए।
8. 'वाचो ग्मिनि:' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
9. सुखी इस रूप को सिद्ध कीजिए।
10. 'आलजाटचौ बहुभाषिणि' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
11. 'सुखादिभ्यश्च' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
12. 'अहंशुभमोर्युस्' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
13. 'अस्मायामेधास्रजो विनि:' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
14. 'मादुपधायाश्च मतोर्वोऽयवादिभ्य:' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
15. 'तसौ मत्वर्थे' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

29.1

1. तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् यह सूत्र है।
2. तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् इस सूत्र से मतुप्-प्रत्यय होता है।
3. काल विवक्षा है।
4. तद् अस्य अस्ति इत्यर्थे तद् अस्मिन् अस्ति इस अर्थ में रसादिगण में पठित प्रातिपदिक से मतुप्-प्रत्यय होता है।

5. मकार को वकार विधान।
6. भसंज्ञा होती है।

29.2

1. प्राणिस्थवाचक प्रथमान्त अदन्त प्रातिपदिक से तदस्यास्त्यस्मिन् इस अर्थ में विकल्प से तद्धितसंज्ञक लच्-प्रत्यय होता है।
2. विधिसूत्र।
3. शनेलचः।
4. प्रज्ञाश्राद्धार्चाभ्यः णः इस सूत्र से णप्रत्यय।
5. उरच्-प्रत्यय।
6. इतरेतरद्वन्द्व।

29.3

1. रप्रत्यय।
2. मधु अस्य अस्ति यह विग्रह है।
3. केशाद्वोऽन्यतरस्याम् इस सूत्र से वप्रत्यय।
4. इनिठनौ।
5. सप्तमी विभक्ति।
6. इनिठनौ मतुप् च।

29.4

1. अस्मायामेधास्रजो विनिः।
2. वाचो ग्मिनिः इस सूत्र से ग्मिनि-प्रत्यय।
3. कुत्सितं बहु भाषते यः।
4. अच्-प्रत्यय।
5. सुखादिभ्यश्च इस सूत्र से इनि-प्रत्यय।
6. अहम् और शुभम् इन दोनों अव्ययों से तदस्यास्त्यस्मिन् अर्थ में तद्धितसंज्ञक युस्प्रत्यय होता है।

॥ उनतीसवां पाठ समाप्त॥